

## श्रीमद्देवीभागवतनवमस्कन्धीयपञ्चमाध्याये महामुनियाज्ञवल्क्यकृतं वाग्देवतास्तवनम्

श्रीभगवानाह नारायणो नारदं याज्ञवल्क्यस्य गुरुशापाद्धतविद्यस्य सूर्याद्भगवतो वेदादिप्राप्तिं स्मृतिहेतवे च वाग्देवतास्तुतेः

कर्त्तव्यताज्ञानम्। स्नानाद्यनन्तरं स मुनिस्स्तवनमारेभे

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्। गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम् ॥ ६ ॥

ज्ञानं देहि स्मृतिं विद्यां शक्तिं शिष्यप्रबोधिनीम्। ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम् ॥ ७ ॥

प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम्।

हे जगन्माता ! कृपा करो। गुरु के श्राप से इस प्रकार (अत्यन्त) हततेजा(तेजरहित) स्मृतिभ्रष्ट और विद्याहीन दुःखी मुझको ज्ञान, स्मृति, विद्या, शिष्यप्रबोधिनी-शक्ति , और ग्रन्थकर्तृत्वशक्ति, सुप्रतिष्ठितसुशिष्य, और सभा में प्रतिभा, तथा शुभ-विचारक्षमता दो।

लुप्तं सर्वं दैवयोगान्नवीभूतं पुनः कुरु ॥ ८ ॥

यथाङ्कुरं भस्मानि च करोति देवता पुनः।

दैवयोग से लुप्त सबकुछ पुनः नवीभूत(जीवित) कर दो, जैसे देवता भस्म में अङ्कुर को पुनर्जीवित करते हैं।

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतीरूपा सनातनी ॥ ९ ॥

सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः।

ब्रह्मस्वरूपा, परमा(श्रेष्ठा), ज्योतीरूपा, सनातनी जो सर्वविद्याधिदेवी है; उस वाणी को प्रणाम हैं।

विसर्गाबिन्दुमात्रासु यदधिष्ठानमेव च ॥ १० ॥

तदधिष्ठात्री या देवी तस्यै नीत्यै नमो नमः।

और जो विसर्ग, बिन्दु, तथा मात्राओं का अधिष्ठान है; उसकी भी जो अधिष्ठात्री देवी है; उस नीति को प्रणाम हैं।

*व्याख्यास्वरूपा सा देवी व्याख्याधिष्ठातृरूपिणी ॥ ११ ॥*

व्याख्यास्वरूपा वो देवी व्याख्याधिष्ठातृरूपा है।

*यया विना प्रसंख्यावान्संख्यां कर्तुं न शक्यते।*

*कालसंख्यास्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ॥ १२ ॥*

जिसके बिना प्रसंख्यावान् प्रसंख्या नहीं कर सकता, जो कालसंख्यास्वरूपा है, उस देवी को प्रणाम हैं। (संख्या शब्द का अर्थ बुद्धि तथा गिनती इत्यादि होता है।)

*भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः।*

जो भ्रमसिद्धान्तरूपा है, उस देवी को प्रणाम हैं।

*स्मृतिशक्तिज्ञानशक्तिबुद्धिशक्तिस्वरूपिणी ॥ १३ ॥*

*प्रतिभा कल्पनाशक्तिर्या च तस्यै नमो नमः।*

जो प्रतिभा, स्मृतिशक्ति-ज्ञानशक्ति-बुद्धिशक्ति-स्वरूपिणी, तथा कल्पनाशक्ति है, उसे प्रणाम हैं।

*सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै ॥ १४ ॥*

*बभूव मूकवत् सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुम् अक्षमः।*

*तदाऽऽजगाम भगवानात्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः ॥ १५ ॥*

*उवाच स च तां स्तौहि वाणीम् इष्टां प्रजापते।*

*स च तुष्टाव तां ब्रह्मा च आज्ञया परमात्मनः ॥ १६ ॥*

चकार तत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तम् उत्तमम्।

सनत्कुमार ने ब्रह्मा से ज्ञान माँगा था। उस ज्ञान के विषय में कोई सिद्धान्त(निर्णय) करने में अक्षम होकर ब्रह्मा मूकवत् हो गये। तब भगवान् आत्मा(सर्वानुस्यूत) श्रीकृष्ण ईश्वर आये। और उन्होंने कहा – हे प्रजापते! उस इष्टभूता वाणी को भजो। तथा उस ब्रह्मा ने परमात्मा की आज्ञा से उसे प्रसन्न किया। तब उसके प्रसाद से उत्तम सिद्धान्त किया।

यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा ॥ १७ ॥

बभूव मूकवत् सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुम् अक्षमः। तदा तां स च तुष्टाव संत्रस्तः कश्यपाज्ञया ॥ १८ ॥

ततः चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभञ्जनम्।

और वसुन्धरा ने एक ज्ञान अनन्त से माँगा, तो वह भी सिद्धान्त करने में अक्षम होकर जब मूकवत् हो गये। और तब उन्होंने सन्नस्त होकर कश्यप की आज्ञा से उसे(देवी को) सन्तुष्ट किया। तब भ्रम नष्ट करने वाला निर्मल सिद्धान्त किया।

व्यासः पुराणसूत्रं च पप्रच्छ वाल्मीकिं यदा ॥ १९ ॥

मौनिभूतश्च सस्मार तामेव जगदम्बिकाम्। तदा चकार सिद्धान्तं तद्वरेण मुनीश्वरः ॥ २० ॥

व्यास ने जब वाल्मीकी को पुराणसूत्र पूछा। (प्रश्न की जटिलता के कारण) मौन हो चुके वाल्मीकि ने उसी जगदम्बिका का स्मरण किया। तब उसके वर से मुनीश्वर ने सिद्धान्त किया।

सम्प्राप्य निर्मलं ज्ञानं भ्रमान्ध्यध्वंसदीपकम्। पुराणसूत्रं श्रुत्वा च व्यासः कृष्णकलोद्भवः ॥ २१ ॥

तां शिवां वेदं दध्यौ च शतवर्षं च पुष्करे। तदा त्वत्तो वरं प्राप्य सत्कवीन्द्रो बभूव ह ॥ २२ ॥

तदा वेदविभागं च पुराणं च चकार सः।

भ्रमात्मक आन्ध्य का ध्वंस करने वाला दीपक निर्मल ज्ञान है। उस ज्ञान को प्राप्त कर और पुराणसूत्र को सुनकर कृष्ण की कला से उत्पन्न हुये व्यास ने उस शिवा को जाना और सौ वर्षों तक पुष्कर में ध्यान किया। तब देवी से वर प्राप्त करके सत्कवि हुये। तब वेद का विभाग और पुराणों की रचना की।

यदा महेन्द्रः पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं सदाशिवम् ॥ २३ ॥

क्षणं तामेव संचिन्त्य तस्मै ज्ञानं ददौ विभुः ।

जब महेन्द्र ने सदाशिव से तत्त्वज्ञान माँगा तो विभु ने क्षणमात्र उनका चिन्तन कर उसे ज्ञान दिया।

पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम् ॥ २४ ॥

दिव्यं वर्षसहस्रं च स त्वां दध्यौ च पुष्करे ।

तदा त्वत्तो वरं प्राप्य दिव्यवर्षसहस्रकम् ॥ २५ ॥

उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम् ।

और जब शब्दशास्त्र को महेन्द्र ने बृहस्पति से माँगा तो उसने दिव्यशतवर्षों तक पुष्कर में तुम्हारा ध्यान किया। तब तुमसे वर प्राप्त कर शब्दशास्त्र और उसके अर्थ का सुरेश्वर को दिव्यवर्षसहस्र तक उपदेश दिया।

अध्यापिताश्च ये शिष्या यैरधीतं मुनीश्वरैः ॥ २६ ॥

ते च तां परिसंचिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरीम् । त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रैः मनुमानवैः ॥ २७ ॥

दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्माविष्णुशिवादिभिः ।

जिन शिष्यों को पढ़ाया गया, और जिन मुनीश्वरों ने पढ़ा, वे सभी उसी सुरेश्वरी का चिन्तन करके ही प्रवृत्त होते हैं। तुम मुनीन्द्रों, मनुओं, मानवों, दैत्येन्द्रों, सुरों और ब्रह्माविष्णुशिवादि के द्वारा संस्तुता और पूजिता हो।

जडीभूतः सहस्रास्यः पञ्चवक्त्रः चतुर्मुखः ॥ २८ ॥

यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्येन मानवः ।

सहस्रास्य(शेष), पञ्चवक्त्र(शिव), तथा चतुर्मुख (ब्रह्मा)जिसकी स्तुति करने में (अक्षमता के कारण)जडीभूत हो गये हैं, उसे मैं मानव एक मुख से कैसे स्तुति का विषय बनाऊँ।

इत्युक्त्वा याज्ञवल्क्यश्च भक्तितनूनात्मकन्धरः ॥ २९ ॥

प्रणनाम निराहारो रुदोद च मुहुः मुहुः।

और ऐसा कहकर भक्तिपूर्वक झुके हुए निराहार याज्ञवल्क्य ने प्रणाम किया और बार बार रोने लगे।

ज्योतीरूपा महामाया तेन दृष्टाप्युवाच तम् ॥ ३० ॥

सुकवीन्द्रो भव इत्युक्त्वा वैकुण्ठं च जगाम ह।

उसके द्वारा दृष्ट होकर ज्योतीरूपा महामाया ने उसे 'सुकवीन्द्र हो जाओ' ऐसा कहा, और वैकुण्ठ चली गई।

याज्ञवल्क्यकृतं वाणीस्तोत्रमेतत्तु यः पठेत् ॥ ३१ ॥

स कवीन्द्रो महावाग्मी बृहस्पतिसमो भवेत्।

याज्ञवल्क्य के द्वारा रचित इस वाणीस्तोत्र को जो पढ़ेगा वह कवीन्द्र महावाग्मी और बृहस्पति के समान हो जायेगा।

महामूर्खश्च दुर्बुद्धिः वर्षमेकं यदा पठेत् ॥ ३२ ॥

स पण्डितश्च मेधावी सुकवीन्द्रो भवेद् ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

और महामूर्ख तथा दुर्बुद्धि भी जब इसे एक वर्ष तक पढ़ेगा, तो निश्चय ही वह भी पण्डित, मेधावी और सुकवीन्द्र हो जायेगा।